© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 08 | October – December 2017

# लाला छज्जूमल (संस्मरण संग्रह) में पात्र कल्पना

डॉ. आशुतोष कौशिक, 742/33, शान्त नगर, काठ–मण्ड़ी, रोहतक।

**ABSTRACT :**लाला छज्जूमल (संस्मरण संग्रह) में क्रमशः दस उपशीर्षक हैं। चेलाराम शास्त्री, लाला छज्जूमल, गोगी और किच्छी, पुरी साहब, मास्टर बदलूराम, तीन सौ छियासी का कर्ज, भुवा चँदरो, भाई मेहर चंद, बटाला वाले जीजाजी, घर गायब है। इन दस उपशीर्षकों में लेखक ने अपनी 40–45 वर्ष पूर्व की अनुभूतियों को पुनः रेखांकित किया है। उपर्युक्त रूप से लिखे जीवनों ने लेखक को किसी न किसी रूप में अवश्य ही प्रभावित किया है। वह प्रभाव इतना गहरा था कि लेखक जीवन पर्यन्त उसे अपनी याद में सँजोए रहा है। फलतः अवसर आने पर वह प्रभाव संस्मरण बनकर फूट पड़ा है और लेखक ने उसे कलमबद्ध किया है। इसका नामकरण लाला छज्जूमल (संस्मरण संग्रह) किया गया है। उपोद्घात में लेखक ने लिखा है – "ये संस्मरण मेरी अनुभूति की आवाज हैं, परन्तु इनमें से आठ का सम्बन्ध किसी न किसी माध्यम से लाला छज्जूमल से जुड़ जाता है। इसलिए इसका नामकरण सीधा–साधा अभिधेय रूप में 'लाला छज्जूमल' (संस्मरण–संग्रह) कर दिया गया है। इस विषय में अधिक सोच–विचार समीचीन नहीं है।

.....

नाम लेखक की रुचि पर और विषय वस्तु पर ही आधारित होता है।"[1] इसका आशय यह नहीं है कि यह लाला छज्जूमल की जीवनी है। हाँ, यह अवश्य है कि लेखक का तादात्म्य लाला छज्जूमल से सीधा–साधा है और यह व्यक्तित्व लेखक को कुछ ज्यादा ही प्रभावित करता है, दूसरा यह है कि लेखक अन्य पात्रों के सम्बन्ध में उसी समय आता है जब वह लालाजी के सम्पर्क में आता है।

यदि किसी एक संस्मरण में आए केन्द्रीय पात्र पर विचार करते हैं तो वह एक कहानी का केन्द्रीय पात्र महसूस होता है, पढ़ने पर कहानी जैसा ही आनन्द भी आता है, परन्तु ये पात्र कहानी नहीं हैं, वास्तविकता हैं। ये समाज के जीते–जागते चरित्र हैं। यह सत्य है कि इनमें से अधिकांश पात्र आज जीवित नहीं हैं। परन्तु एक दो पात्र जीवित हैं। यथा 'गोगी', 'पुरी साहब', 'मेहर चन्द की पत्नी' उनसे वार्तालाप करके अन्य पात्रों के बारे में जानने का प्रयास किया तो पता चला कि वास्तव में वे पात्र उदात्त रहे हैं। इस संदर्भ में उपोद्घात में लेखक ने लिखा है – "इसको कहानी–संग्रह मानना नितान्त भूल होगी। हाँ, यह सत्य है कि इसके कथ्य में कहानी का सा आभास होता है, परन्तु कहानी के समान कल्पना का साम्राज्य इसमें नहीं है। इन संस्मरणों के पात्र पूर्णतः काल्पनिक या अवास्तविक नहीं हैं। जिन घटनाओं और क्रिया–कलापों का सहारा पात्रों के व्यक्तित्व को निखारने या चरित्र का निर्माण करने के लिए किया गया है, वे भी पूर्णतः अवास्तविक नहीं हैं।"[2]

यह सत्य है कि ये पात्र अवास्तविक नहीं, काल्पनिक नहीं, लेकिन इनका चित्रण जैसे वे हैं, उनसे अधिक किया गया है या बढ़ा–चढ़ा कर किया गया है। इस आक्षेप को स्वयं लेखक ने स्वीकार किया है, लेकिन इस आक्षेप का उत्तर देते हुए स्वयं लेखक ने लिखा है – "कहीं–कहीं पाठक को पठनोपरान्त यह

भी लगेगा कि इनके वर्णन अतिशयोक्ति पूर्ण या अति रंजित हैं। इस संदर्भ में हमारा यही कहना है कि हार, कंकण, मेखला, बिंदी के बिना भी नारी का नैर्सगिक सौन्दर्य होता है। बस, इनसे उस सौन्दर्य में अभिवृद्धि होती है और भाव का उपकार होता है। इसीलिए कहीं–कहीं ऐसा वर्णन पाठक को लगता है तो वह मात्र उस भाव को प्रखरता से प्रदर्शित करने या अभिव्यक्ति के चरम शिखर तक पहुँचाने या अनुभूत सत्य को पाठक तक उसी रूप में पहुँचाने या अनुभूत सत्य को पाठक तक उसी रूप में पहुँचाने या उसे अनुभूत करवाने के लिए ही किया गया है।"[3]

इस संस्मरण संग्रह पर चर्चा करते हुए इसकी भूमिका में डॉ॰ मारकण्डे आहूजा लिखते हैं – "संग्रह में समाहित दश विविध पात्रों की कार्य–शैली, रहनी–करनी से लेखक स्वयं किसी न किसी हद तक अवश्य ही प्रभावित हुआ है। अतः बचपन के उस प्रभाव को वह अपने अन्तर्मन में संजोये हुए था, अब अचानक किसी घटना विशेष से वे प्रभाव इन निबंधों के माध्यम से बाहर आ गए हैं।

इन दस पात्रों को अपनी उर्वर–कल्पना से लेखक ने मानव–मूल्यों के प्रहरी के रूप में चित्रित किया है। लेखक वर्तमान समय को मूल्यों के संकट का समय मानता है। आज की युवा–पीढी सामाजिक–मूल्यों को तिलांजलि दे रही है। फलतः उनमें से आज अपने बुजुर्गों के प्रति सम्मान–भाव तिरोहित हो रहा है। 'गोगी और किच्छी' युवा–पीढी के मूल्यों की तलाश का प्रतीक है तो 'चेलाराम शास्त्री', 'लाला छज्जूमल' दोनों पुरानी पीढी के उन लोगों के प्रतीक है जो अपने–पराये के भेद से ऊपर हैं, वे परहित को ही सबसे बड़ा धर्म मानते हैं। ––– जातिवाद के द्वेष से दूर ये लोग जरुरतमंद लोगों की मदद के लिए तत्पर रहते हैं। अतः समाज में ये लोग आपसी भाई–चारे के लिए साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए होने आवश्यक भी हैं।"[4]

'तीन सौ छियासी का कर्ज' संस्मरण में लेखक स्पष्ट करना चाहता है कि इस संसार में हम सब लोग अपने कर्ज की डोरी से बँधे खिंचे चले आते हैं। ऋण बंधन के कारण हमें बार–बार जन्म लेना पड़ता है। 'पुरी साहब' के माध्यम से लेखक ने एक सच्चे अध्यापक की कल्पना को साकार किया है। वे मानते हैं अध्यापक स्वयं स्कॉलर हो यह जरुरी नहीं है, अपितु उसमें एक स्कॉलर बनाने की चाहत और योग्यता होनी चाहिए वह विद्यार्थी के स्तर तक पहुँचकर उसे समझाए काम से जी न चुराए, नियमितता के साँचे में ढलकर विद्याख्रथयों को इस साँचे में ढाले। अध्यापक की सार्थकता द्रोणत्व में नहीं, अपितु अर्जुनत्व में वे मानते है। 'भुवा चँदरो' वैधव्य की विभीषिका को चित्रित करता है। वह अपने जीवन को लोक–कलाओं और लोक–संस्कारों, से जोड़कर क्रूर काल से लोहा लेते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करती है। यहाँ लेखक का करुणोद्रेक चरम सीमा को स्पर्श करता है।

'घर गायब है' का बूढ़ा रामदीन अपनों की उपेक्षा का शिकार है। सारा जीवन जिस परिवार के लिए मरता रहा, खपता रहा, कष्ट भोगता रहा, आज सभी पारिवारिक सदस्यों ने उससे मुँह फेर लिया है। वृद्धावस्था में वृद्धाश्रम अब उसका ठिकाना है, उसे इन्तजार है कोई अपना आकर उसे यहाँ से ले जाएगा, किन्तु इन्तजार इन्तजार ही है। इसके माध्यम से लेखक ने कहीं न कहीं बुजुर्गों की समस्या को उकेरा है। उपेक्षित पीढी की बेबशी, लाचारी, निरीहता बरबस आँखें नीची कर देती है।

'भाई मेहर चन्द', 'बटाला वाले जीजा जी' संस्मरण एक तरफ मूल्य–बोध को संकेतित करते हैं तो दूसरी तरफ पंजाब के आतंकवाद का भी दस्तावेज बने हैं। 'मास्टर बदलूराम' संस्मरण एक असफल व्यक्तित्व का जीता जागता सबूत है जो जीत कर भी अंत में अपनी संतान के कारण हार जाता है।

मूलतः यह एक संस्मरण संग्रह है न कि आत्म चरित। लेखक ने स्वयं लिखा है – "शैली की दृष्टि से ये संस्मरण निबन्ध के निकट हैं। परन्तु यहाँ चारों तरफ जीवन का एक विशिष्ट सर्जन भी है जो जीवन लेखक के चतुर्दिक निर्मित हो रहा है, लेखक की सम्पूर्ण भावनाएँ उस जीवन से तादात्मय स्थापित करती चलती हैं। यहाँ कोरा ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन नहीं है। अपितु अनेक उन जीवनों का वर्णन है जिन जीवनों, चरित्रों ने लेखक को लिखने के लिए आत्म–विभोर किया है और अपनी मानसिक खुमारी में लेखक ने उनका वर्णन किया है। ––– लेकिन केवल अपनी स्मृति के आधार पर विविध व्यक्तियों, विविध विषयों, उनके जीवन की विविध घटनाओं पर लेख लिखे तो वह संस्मरण ही कहलाता है।"[5]

अतः निष्कर्ष रूप में ये संस्मरण न तो निबन्ध हैं, न आत्म चरित, न जीवनी, बल्कि शुद्ध संस्मरण हैं, जिन्हें लेखक ने अपनी भावानुभूति के आधार पर अंकित किया है। बिना किसी लोभ लालच के लेखक ने मात्र इन चरित्रों को इसलिए उभारा है कि ये आज समाज के लिए बहुत उपादेय हैं।

**References :**

1 **डॉ॰ विश्वबन्धु शर्मा : लाला छज्जूमल (संस्मरण संग्रह), उपोद्घात, पृ॰ 1**
2 **वही, वही, वही, पृ॰ 1**
3 **वही, वही, वही, पृ॰ 1.2**
4 **डॉ॰ मारकण्डे आहूजा : लाला छज्जूमल (संस्मरण संग्रह), भूमिका**
5 **डॉ॰ विश्वबन्धु शर्मा : लाला छज्जूमल (संस्मरण संग्रह), उपोद्घात, पृ॰ 3**